हिंदी साहित्य एवं मानवीय मूल्य

संपादक
डॉ. गणेशचंद्र शिंदे
डॉ. संदीप एस. पाईकराव
डॉ. साईनाथ ग. शाहू

परिकल्पना

© सम्पादकाधीन

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-95104-08-1

मूल्य : ₹ 995

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना*, के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ल, दिल्ली से टाइप सेट होकर
कम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

63. रामचरितमानस में अभिव्यक्त मानव मूल्य 292
–प्रा. माने शेषराव सुभाषचंद्र
64. प्रेमाख्यान काव्य में मानवी मूल्य 297
–डॉ. खाजी एम.के.
65. तुलसीदास के साहित्य में मानवीय मूल्य एवं नैतिकता 302
–गोस्वामी श्रीकांत विलासगिर
66. भारतीय साहित्य और मानवीय मूल्य 305
–प्रा.डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा
67. संत कबीर और तुलसीदास के साहित्य में मानव मूल्य 309
–डॉ. संजय नाईनवाड
68. साहित्य व मानवीय मूल्य एक अटूट संबंध 315
–श्रीमती प्रिया विवेक अनासाने
69. प्रेमचंद के उपन्यास गोदान में मानवीय मूल्य 320
–प्रीती यादव
70. विष्णु प्रभाकर की कहानियों में मानवीय मूल्य 324
–संतोष शंकर साळुंखे / डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर
71. हिंदी फिल्मी गीतों में नैतिक मूल्य 329
–डॉ. ज्योति मुंगल
72. मानवीय मूल्यों के पतन की दास्तान : 'कितने पाकिस्तान' 334
–डॉ. गोविंद शिवशेट्टे
73. महीप सिंह के कथा साहित्य में चित्रित नैतिक मूल्यों का ह्रास 338
–डॉ. ई. राजा कुमार
74. भक्तिकालीन काव्य साहित्य में मानवीय मूल्य 342
–डॉ. शंकर गंगाधर शिवशेट्टे
75. राजेश जोशी की कविताओं में मानवीय मूल्य 347
–डॉ. उमाटे साईनाथ तुकाराम
76. 'फाँस' उपन्यास में चित्रित किसान मानवीय मूल्य 352
–प्रा. आर.व्ही. राजेगोरे
77. भारतीय तत्त्वचिंतन में मानवीय मूल्यों का साहित्य 356
–प्रा. निर्मला लक्ष्मण जाधव
78. नीरज के काव्य में मानवीय मूल्यों का विवेचन 361
–प्रा. डॉ. छाया तोटवाड

मानवीय मूल्यों के पतन की दास्तान : 'कितने पाकिस्तान'

डॉ. गोविंद शिवशेट्टे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग
महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा

हिंदी के श्रेष्ठतम उपन्यासों की श्रेणी में कथाकार कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान' समकालीन जगत में मील का पत्थर साबित हुआ है। जिसने हिंदी उपन्यास साहित्य एवं साहित्यकारों के दायरे को वैश्विक रूप प्रदान किया। युग और समय की माँग को समझने वाला रचनाकार युगदृष्टा कहलाता है। उसी माँग की पूर्ति का प्रयास 'कितने पाकिस्तान' कृति है। जिसमें इतिहास की गहराई में जाकर सामग्री तथा तर्क के आधार पर तटस्थता और निष्पक्ष रूप से बँटवारे की समस्या का हल ढूंढकर 'नव मानवता' की कल्पना को साकार रूप प्रदान करने का प्रयास किया है। इस रचना में टूटते हुए मानवीय मूल्यों को संजोने तथा दहशत की जिन्दगी में मानवता की खोज की है। आज के आतंकी और (भांडवलशाही) पूंजीवादी खदान की दुनियाँ में कमलेश्वर ने नव मानवता रूपी हीरे की तलाश की है, जो केवल अपनी चमक के बलबूते पर दुनिया को अचम्भित कर देता है।

धर्म व्यक्ति को सच्चाई की राह दिखाता रहा है। पर धर्म के ठेकेदारों ने धर्म की राह पूर्णतः परिवर्तित कर उसका प्रयोग स्वार्थ प्राप्ति के लिए किया। परिणामतः धर्म सचाई के पथप्रदर्शक न रहकर कट्टरता, क्रूरता के प्रतीक बनते जा रहे हैं। भारतीय मिट्टी का इतिहास गवाह है कि, विशाल महाकाय देश का बँटवारा भी इसी धर्म ने किया है। आज यदि हमने धर्म की कट्टरता को नहीं रोका तो कितने पाकिस्तान का सिलसिला चलता ही रहेगा।

'कितने पाकिस्तान' एक ऐसे समय की सच्ची दास्तान है। जिसने अनेक सदमे दिए, लहू की नदियाँ बहाई हैं, उन सदमों को न वे भूल पाये हैं और न हम। 5000 वर्षों की सभ्यता, संस्कृतिः को फिरंगियों ने, सत्ता के सौदागरों ने रेगिस्तान बना दिया। इस भारत ने सदियों से सबको जीने का वसीला और रहने को पनाह दी है। पर इन्हीं फिरंगियों ने उसकी कोख में खंजर घोपा है। इस्लाम आये उन्हें अपना धरती पुत्र मानकर उसका भरण पोषण किया पर वे आगे चलकर शासक बने इसे भी स्वीकारा गया। इतिहास इस बात की गवाही देता है कि, इस्लाम शासकों ने सत्ता के लोभ से अपने लोगों तथा परिवारों के साथ भी षड़यंत्र कर कत्लेआम किया है। कमलेश्वर ने बावर से लेकर औरंगजेब के क्रूरकाल को गवाह के रूप में उपस्थित किया। अपनी इन्सानी समय की अदालत में उन मुद्दों को पेश किया,

जिन्होंने भारतीय इतिहास, संस्कृति को नया मोड़ और जोड़ दिया है। हिन्दू-मुस्लिम झगड़े की नींव बाबरी मस्जिद में छिपी हुई है। इसलिए हम बाबर को बड़ा गुनहगार मानते हैं। पर कमलेश्वर इस बात को सामने लाते हैं कि, इस झगड़े की नींव बाबर न होकर इब्राहीम लोदी है। इस झगड़े मे 1947 तक आते-आते देश के अखण्डत्व को तोड़ दिया।

कमलेश्वर ने इतिहास के उस समय का बयान लिया, जहाँ मानवता बार-बार कराह रही थी। अत्यन्त बरबता और कट्टरता से मानवता को सूली पर चढ़ा दिया। बर्बर बादशाह औरंगजेब ने सत्ता की हवस में अपने परिवार को जीते जी सूली पर लटका दिया। दाराशिकोह जैसे मानवतावादी भाई को काफिर कहकर मार दिया। पर अवाम की नजरों में दाराशिकोह जनराजा बना रहा। हर समय ऐसे ही होता रहा है कि, "हर सदी में एक दाराशिकोह के साथ एक औरंगजेब भी पैदा होगा इस दस्तूर को बदलना होगा, नहीं तो मेरे साथ-साथ तुम सबका भविष्य भी डूब जाएगा।... अगर मैं मर गया तो तुम्हारे सारे सपने समाप्त हो जायेंगे।" कमलेश्वर इस बात पर बड़ी चिन्ता व्यक्त करते हैं यदि हमने इस सच्चाई के साथ के झूठे दस्तूर को नहीं बदला तो, कल हमारे अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह उपस्थित हो जाएगा। हमारा, तुम्हारा भविष्य अंधकारमय होगा। औरंगजेब ने जिसका सहारा लेकर सत्ता भोगी वही राह अंग्रेजों ने चुनी और हिन्दू-मुस्लिम को लड़वाते रहे।

अंग्रेज भिखारी की तरह तो आये पर यहाँ की तमाम जनता को भिखारी बनाकर चले गये। पर जाते जाते भी खुशी-खुशी वे देश को नहीं छोड़े। लेखक अंग्रेजों की इस मनोवृत्ति पर करारा प्रहार करते हैं इन अग्रजों के बच्चों को सोचना चाहिए सदियों पहले सौदागर की तरह सलाम करते आये थे, वैसे ही सलाम करो और अपने मुल्क लौट जाओ पर जो कमा लिया वो तुम्हारी किस्मत ले जाओ पर जो हमारा वो तो खुशी-खुशी छोड़ जाओ।

इस देश की विडम्बना यह रही कि, जिस देश की सभ्यता, संस्कृति और इतिहास को कभी देखा और जाना नहीं ऐसे माउण्टबेटन और उनके सहायकों ने देश का बँटवारा किया। सच्चाई तो यह है कि, अंग्रेज विभाजन चाहते थे जिन्ना भी जानते थे कि, अंग्रेज चले जाने के बाद पाकिस्तान नहीं मिलेगा। इसलिए मजहब की नस्ल का बखूबी उपयोग कर नफरत का पाकिस्तान बनाया, पर वे भूल चुके हैं कि, खोट और नफरत की बुनियाद पर कोई भी मुल्क अधिक दिनों तक टिक नहीं पायेग, "पाकिस्तान एक मजहबी उसूलों की मिसाल है। वह तो मजहब के नाम पर लूटा गया सिर्फ इलाका है। जिसे मुल्क कहा गया। यह मुल्क तो टूटेगा, टूटकर रहेगा" और वही हुआ जब बांग्लादेश का निर्माण हुआ। जिन्ना को कामयाबी तो मिली, विभाजन तो हुआ, पर क्या मिला विभाजन से आम आदमी को, उनके नसीब में तो भीख माँगना ही लिखा था, "विभाजन के बाद बचा क्या है भूख और भिखमंगे के सिवा? यहीं तो दो हिस्सों में बँट गए। भिखमंगे कबीर की विरासत हैं और तकसीम हो गए मुल्कों का

नसीब बँटवारे ने मानवता को दफन कर दिया। यह दफन की परम्परा औरंगजेब से आज तक हम संजोये हुए हैं। बदले की भावना तीव्र से तीव्रतर होती गई। मजहब की आग ने चिंगारी का रूप लेकर इन्सानियत का हवन किया है। जब तक हम मजहब के नफरत को दफनायेंगे नहीं, तब तक मानवतावादी विश्व नहीं बनेगा। क्योंकि इन्सान की पहचान मजहब के सहारे करने का प्रयास बलवती हो रही है।" इन्सान और इन्सान की कुदरती पहचान के बीच यह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, सीरिया, लेबनान कहाँ से आ जाते हैं? अब तक हमने कई सदमे सहे हैं, इसे नहीं रोका तो अनेकानेक पाकिस्तान बनेंगे क्योंकि सभी ओर नफरत की आग फैल रही है, "सब मुल्कों में नफरत का एक नया पाकिस्तान बनाने की कोशिशें जारी है। क्या हुआ बोस्निया में, क्या हुआ है साईप्रस में, क्या हुआ है तब के टूटे सोव्हियत यूनियन और अब के बने रशियन फेडरेशन में, क्या हो रहा है आज के अफगानिस्तान में? हर व्यक्ति नफरत के सहारे अपने ही लोगों के खिलाफ एक दूसरा पाकिस्तान ईजाद करना चाहता है।" विश्व इतिहास इस बात का साक्षी है कि, पाकिस्तान से पाकिस्तान पैदा होता है। पता नहीं आज का मनुष्य किस दिशा में कदम बढ़ा रहा है। अपने ही लोगों के खिलाफ लड़कर किस सफलता के शिखर तक पहुँचना चाहता है। उसकी यह स्वार्थ जीजीविषा बड़ी भयानक रूप लेगी।

कमलेश्वर ने वर्तमान में बढ़ता हुआ बाजार, मुक्त व्यापार के नाम पर नव साम्राज्यवाद स्थापित हो रहा इसका जायजा कितने पाकिस्तान में लिया है। बाजार और मुक्त व्यापार में तो मानवता नदारद हो गई। जिन सौदागरों की जमात ने अपना साम्राज्य फैलाकर हिन्दुस्तान को जकड़ लिया था, वे ही उपनिवेशवादी फिरंगी अब विश्व को अपने शिकंजे में लेना चाहते हैं। सभी को ज्ञात है कि, बाजारों के लिए ही साम्राज्य बनाये जाते हैं और साम्राज्यों की नाभि बाजार से जुड़ी है। साम्राज्यों के रूप बदल सकते हैं। अब तो इस दस्तक को सुनो! वरना और एक नया साम्राज्यवाद इस विश्व पर अपना शिकंजा स्थापित करेगा। साम्राज्य प्रजातांत्रिक, आर्थिक साम्राज्य का रूप ले सकता है। पर इस साम्राज्य का मुख्य आधार बाजार है। बाजार ! बाजार !! बाजार !!! आज दस्तक देती हुई नई सदी में इसका नाम बाजारवाद है। आज बाजारवाद के नाम पर फिर से नये जाल फैलाकर अवाम को गुलाम किया जा रहा है। क्या हुआ उस जापान के दो नगरों का जिनको अणुपरीक्षण कर उड़ा दिया। आज भी हीरोसीमा की कराही ध्वनि सुनाई देती है, "मेरे ऊपर जो परमाणु बम गिराया गया था, वह दुर्घटना नहीं युद्ध समाप्त करने के नाम पर सोचा-समझा परीक्षण मानव जाति पर किया गया जघन्यतम आक्रमण... अरे दरिंदों देखो मेरे इस क्षार क्षार हुए शरीर को नागासाकी के क्षत-विक्षत भूगोल को, माँ के कोख में विकलांग हो गई संतानों को, प्रचण्ड तापमान में पिघलकर वाष्प की तरह उड़ जाने वाले लाखों मनुष्यों को, जल जलकर मुँह तक आकर न निकलने वाली मृत्यु की चीत्कारों की घुटती साँसों में दम तोड़ती बेबस उसाँसों

को, हिचकी लेती हिचक-हिचक कर मरती जिन्दगी को, देखो मुझे मैं हीरोसिमा हूँ। मैंने खुद झेला है मानव विनाश के मृत्यु को परमाणु नाभिकीय संकट को जन्म देने वाले जितने अपराधी हैं। में उन्हें उनकी कब्रों भी में चैन से सोने नहीं दूंगा। वे सभी वैज्ञानिक चाहे फ्रान्स के हों, जर्मनी, ब्रिटेन या रूस के वे मानव द्रोही और जघन्य अपराधी हैं। इन्हें कब्रों में चैन से सोने की ऐय्याशी बख्शी नहीं जा सकती।" भौतिक विकास के नाम पर प्रकृति का काफी नुकसान किया जा रहा है। आज संसार की तमाम प्रयोगशालाओं में भीषणतम मौत का उत्पादन शुरू करने की होड़ लगी हुई है। सफल परीक्षण के बाद अब युद्ध में रत राजनीतिक सत्ताएँ मौत का थोक उत्पादन करना चाहती हैं। कुछ कीजिए नहीं तो ब्रह्माण्ड से पृथ्वी का नामोनिशान मिट जाएगा क्योंकि सृष्टि के नियमों के अनुसार जो जन्म लेता है वह मरता है, जो जिस काम के लिए बना है उसे वह पूरा कर जाता है, वैसे ही परमाणु जो बन रहे हैं वे शान्ति के लिए न होकर ध्वंस के लिए ही हैं, जितने बम बनेंगे ये इस वसुंधरा को नेस्तनाबुत करके ही दम लेंगे।

निषकर्षतः यही कहा जा सकता है कि, हम उस भयावह विभाजन को रोकने में कामयाब नहीं हो पाये, पर अब हमें मजहब का, बाजार का, व्यापार का परीक्षण नकाब पहनकर मौत का मंजर तैयार करने वालों को बेनकाब करना जरूरी है। भले ही देश का बंटवारा सरहद से हुआ है पर मानवता तथा नैतिकता को दुनिया की कोई भी सरहद विभाजित नहीं कर सकती। इसलिए मानवता तथा नैतिक मूल्यों का जतन करना आज की प्रमुख मांग है। जिससे इन्सानियत का बीज पुनः धरती पर अंकुरित हो जाएँ।

संदर्भ

समकालीन हिंदी उपन्यास, डॉ सुरज पालीवाल
आधुनिक हिंदी उपन्यास, संपा. डॉ. नामवर सिंह
कितने पाकिस्तान, कमलेश्वर
हिंदी उपन्यास का इतिहास, डॉ. गोपालराय